1961 My Elder Brother: About family events during 1905 to 1922

Manjhale Bhaiyya, a series of six articles in Sanmati Sandesh: part 1 (p.7-8, Feb 1961), part 2 (p.23-25, March 1961), part 3 (p. 19-20, June 1961), part 4 is missing, part 5 (?) part 6 (p. 7-8, March 1963)

See 1924A Letters to my elder brothers

Part 1

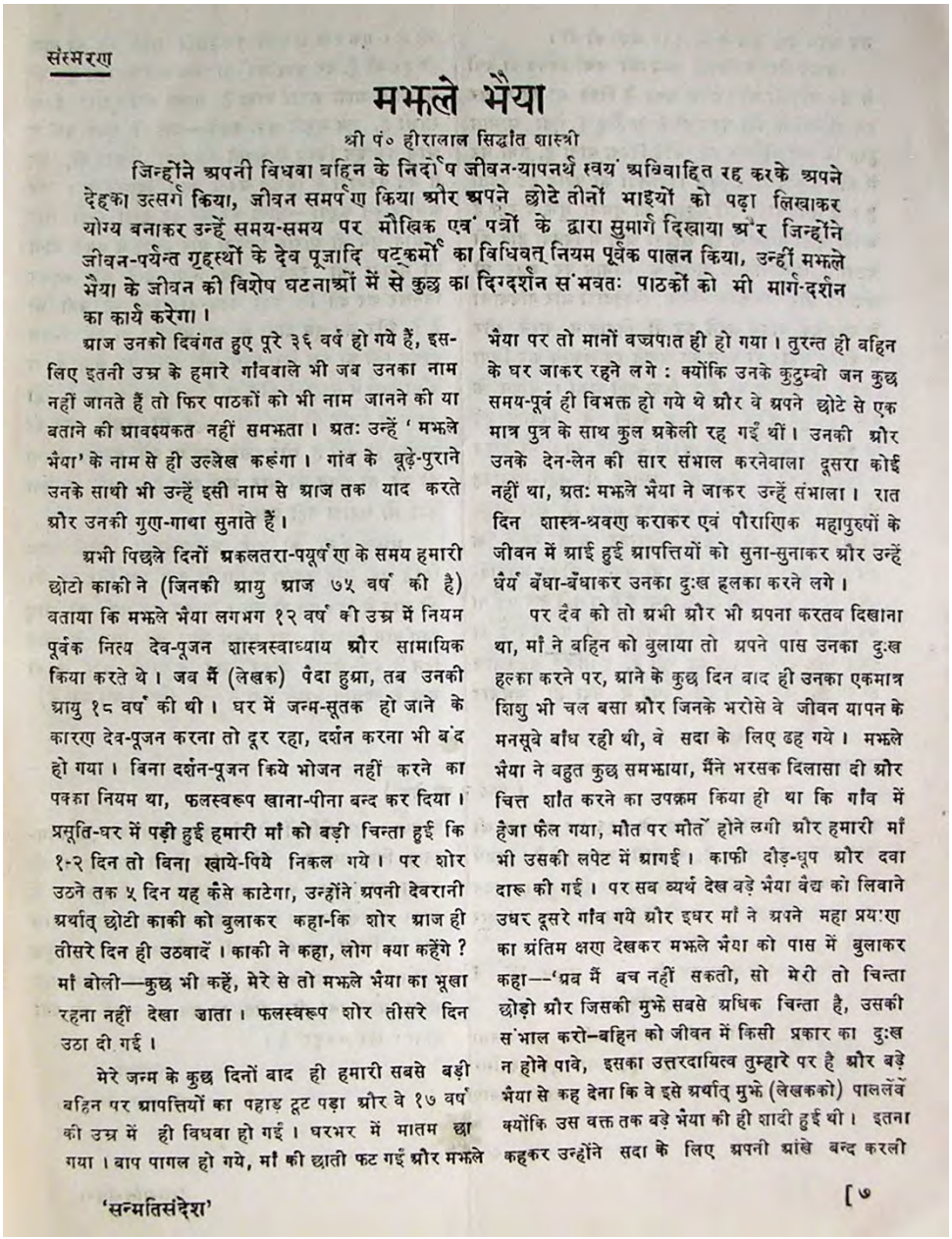

संस्मरण

मझले भैया

श्री पं० हीरालाल सिद्धांत शास्त्री

जिन्होंने अपनी विधवा बहिन के निर्दोष जीवन-यापनार्थ स्वयं अविवाहित रह करके अपने देहका उत्सर्ग किया, जीवन समर्पण किया और अपने छोटे तीनों भाइयों को पढ़ा लिखाकर योग्य बनाकर उन्हें समय-समय पर मौखिक एवं पत्रों के द्वारा सुमार्ग दिखाया और जिन्होंने जीवन-पर्यन्त गृहस्थों के देव पूजादि षट्कर्मों का विधिवत् नियम पूर्वक पालन किया, उन्हीं मझले भैया के जीवन की विशेष घटनाओं में से कुछ का दिग्दर्शन संभवतः पाठकों को भी मार्ग-दर्शन का कार्य करेगा।

आज उनको दिवंगत हुए पूरे ३६ वर्ष हो गये हैं, इसलिए इतनी उम्र के हमारे गाँववाले भी जब उनका नाम नहीं जानते हैं तो फिर पाठकों को भी नाम जानने की या बताने की आवश्यकत नहीं समझता। अतः उन्हें 'मझले भैया' के नाम से ही उल्लेख करूंगा। गांव के बूढ़े-पुराने उनके साथी भी उन्हें इसी नाम से आज तक याद करते और उनकी गुण-गाथा सुनाते हैं।

अभी पिछले दिनों अकलतरा-पर्यूषण के समय हमारी छोटी काकी ने (जिनकी आयु आज ७५ वर्ष की है) बताया कि मझले भैया लगभग १२ वर्ष की उम्र में नियम पूर्वक नित्य देव-पूजन शास्त्रस्वाध्याय और सामायिक किया करते थे। जब मैं (लेखक) पैदा हुआ, तब उनकी आयु १८ वर्ष की थी। घर में जन्म-सूतक हो जाने के कारण देव-पूजन करना तो दूर रहा, दर्शन करना भी बंद हो गया। बिना दर्शन-पूजन किये भोजन नहीं करने का पक्का नियम था, फलस्वरूप खाना-पीना बन्द कर दिया। प्रसूति-घर में पड़ी हुई हमारी माँ को बड़ी चिन्ता हुई कि १-२ दिन तो बिना खाये-पिये निकल गये। पर शोर उठने तक ५ दिन यह कैसे काटेगा, उन्होंने अपनी देवरानी अर्थात् छोटी काकी को बुलाकर कहा-कि शोर आज ही तीसरे दिन ही उठवादें। काकी ने कहा, लोग क्या कहेंगे? माँ बोली—कुछ भी कहें, मेरे से तो मझले भैया का भूखा रहना नहीं देखा जाता। फलस्वरूप शोर तीसरे दिन उठा दी गई।

मेरे जन्म के कुछ दिनों बाद ही हमारी सबसे बड़ी बहिन पर आपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ा और वे १७ वर्ष की उम्र में ही विधवा हो गई। घरभर में मातम छा गया। बाप पागल हो गये, माँ की छाती फट गई और मझले भैया पर तो मानों वज्रपात ही हो गया। तुरन्त ही बहिन के घर जाकर रहने लगे: क्योंकि उनके कुटुम्बी जन कुछ समय-पूर्व ही विभक्त हो गये थे और वे अपने छोटे से एक मात्र पुत्र के साथ कुल अकेली रह गई थीं। उनकी और उनके देन-लेन की सार संभाल करनेवाला दूसरा कोई नहीं था, अतः मझले भैया ने जाकर उन्हें संभाला। रात दिन शास्त्र-श्रवण कराकर एवं पौराणिक महापुरुषों के जीवन में आई हुई आपत्तियों को सुना-सुनाकर और उन्हें धैर्य बँधा-बँधाकर उनका दुःख हलका करने लगे।

पर दैव को तो अभी और भी अपना करतब दिखाना था, माँ ने बहिन को बुलाया तो अपने पास उनका दुःख हल्का करने पर, आने के कुछ दिन बाद ही उनका एकमात्र शिशु भी चल बसा और जिनके भरोसे वे जीवन यापन के मनसूबे बाँध रही थी, वे सदा के लिए ढह गये। मझले भैया ने बहुत कुछ समझाया, मैंने भरसक दिलासा दी और चित्त शांत करने का उपक्रम किया ही था कि गाँव में हैजा फैल गया, मौत पर मौतें होने लगी और हमारी माँ भी उसकी लपेट में आगई। काफी दौड़-धूप और दवा दारू की गई। पर सब व्यर्थ देख बड़े भैया वैद्य को लिवाने उधर दूसरे गाँव गये और इधर माँ ने अपने महा प्रयाण का अंतिम क्षण देखकर मझले भैया को पास में बुलाकर कहा—'अब मैं बच नहीं सकती, सो मेरी तो चिन्ता छोड़ो और जिसकी मुझे सबसे अधिक चिन्ता है, उसकी संभाल करो—बहिन को जीवन में किसी प्रकार का दुःख न होने पावे, इसका उत्तरदायित्व तुम्हारे पर है और बड़े भैया से कह देना कि वे इसे अर्थात् मुझे (लेखकको) पाललेवें क्योंकि उस वक्त तक बड़े भैया की ही शादी हुई थी। इतना कहकर उन्होंने सदा के लिए अपनी आंखे बन्द करली

उस समय मेरी उम्र केवल १ ।।। वर्ष की थी।

मझले भैया के विवाह सम्बन्धी चर्चा विगत दो वर्षों से चल रही थी और अनेक जगह से रिश्ते आ रहे थे, पर इन दो वर्षों में घटी घटनाओं से उन्हें कुछ ऐसा आभास हुआ कि जब भी कहीं का कोई रिश्ता आता है, तभी घर में कोई न कोई आकस्मिक विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ता है। ये सभी मानों मेरी अल्पायु की सूचना मुझे दे रही हैं अपनी छोटी बहिन के इस अत्यल्प आयु में विधवा होने की घटना ने तो मानों उक्त अन्तर के आभास पर मुहर ही लगा दी और फल स्वरूप पिता, रिश्तेदारों और गाँववालों के अत्यधिक आग्रह करने पर भी विवाह न करने और आजीवन ब्रह्मचारी रहने का आपने दृढ संकल्प कर लिया जिसे मरण-पर्यन्त भी कोई डिगा नहीं सका। बहिन के यहाँ रहते हुये चूंकि वे सम्पन्न घराने में विवाही हुई थीं और भी अधिक रिश्ते विवाह के आये, स्वयं भी बहिन ने विवाह करने के अनेक बार प्रस्ताव ही नहीं-सत्याग्रह भी किये, मगर वे अपने संकल्प पर अटल रहे और बहिन को सदा एक ही उत्तर देकर निरन्तर करते रहे—'कि जब तुम बालविधवा होने पर भी अपना जीवन ब्रह्मचर्य-पूर्वक यापन कर सकती हो, तो क्या मैं ऐसा नहीं कर सकूंगा जब बहिन कहती—'स्त्रियाँ तो सदा से ही यह वैधव्य का दुर्वह भार वहन करती आ रही हैं, इसीलिए सहजशील हो गई हैं, मगर पुरुष इस विषय में सदा ही कमजोर रहे हैं। एक स्त्री के मरने पर दूसरी शादी की तो बात ही दूर की है, पर पुरुष वर्ग तो एक स्त्री के रहते हुए भी अनेकों से शादी करता आया हैं, शास्त्र और पुराण इसके साक्षी हैं, तब मझले भैया कहते—भले ही पुरुष वर्ग ने आज तक इस विषय में अपनी कमजोरी दिखाई हो, पर मैं उस परम्परा के विरुद्ध अपनी दृढ़ता दिखाऊंगा। जब कभी बहिन कहती—शादी कर लेने पर तुम्हीं सुखी नहीं होओगे, हमें भी आराम मिलेगा और बुढ़ापे में अपन दोनों को सहारा भी रहेगा। तब भैया उन्हें यह कहकर निरुत्तर कर देते कि कहीं ननद-भौजाइयों की बनी भी है? और जब तुम दोनों में नहीं बनेगी, तो हमें विवश होकर स्त्री का पक्ष लेना पड़ेगा और अपने घर जाना पड़ेगा वैसी दशा में तुम्हारी कौन सार संभाल करेगा? रही बुढ़ापे में सहारे की बात, सो पहले तो उसके आने की उम्मीद ही नहीं है और दूसरे तुम्हें या हमें बुढ़ापा देखना भी पड़े, तो अपने जो चार भाई और हैं, उनमें से क्या कोई भी सहारा नहीं देगा?'

मझले भैया की उक्त भविष्यवाणी कितनी सत्य सिद्धि हुई, उन्हें बुढापा देखना ही नहीं पड़ा और ३८ वर्ष की आयु में दिवंगत हो गये। बहिन ७५ वर्ष की आयु स्वर्गधाम सिधारी, पर मझले भैया की मृत्यु के दूसरे दिन से बड़े भैयाने जाकर उन्हें संभाला और उनकी मृत्यु के पश्चात् मझले भैया ने—। (शेष अगले अंक में)

Part2

संस्मरण

मझले भैया

श्री पं० हीरालाल सिद्धान्तशास्त्री

(लेखांक २)

शांति और अहिंसा ने अपनी मौत और हिंसा पर किस प्रकार विजय पाई, यह रोमांचकारी घटना प्रेरणाप्रद है।

हमारे परिवार में शिक्षा का श्री गणेश मझले भैया ने ही किया। उनके समय तक हमारे गाँव में लोअर प्राइमरी स्कूल ही था। उसकी शिक्षा समाप्त करने के बाद उनकी इच्छा आगे पढ़ने की हुई। उस समय तक मड़ावरा में अपर प्राइमरी स्कूल नहीं खुला था, और न गाँव का अन्य कोई व्यक्ति गाँव से बाहर पढ़ने को गया था। उनकी अवस्था बहुत छोटी थी, अतः माता-पिता ने उन्हें उनकी ननिहाल भेजना उचित समझा और वे अपनी ननिहाल सोंरई में जाकर आगे की शिक्षा प्राप्त करने लगे। हमारे नाना का एक निजी मंदिर था, जो उनके घर से ही लगा हुआ था और उनके परिवार के प्रमुख लोग प्रायः प्रतिदिन नियमित रूप से प्रातः देव-पूजन और सायं शास्त्र-वचनिका आदि करते थे, संभवतः यहीं से मझले भैया के बाल-सुलभ हृदय में उक्त धार्मिक संस्कारों का बीजारोपण हुआ, जिसका कि क्रम उनके जीवन-पर्यन्त चला।

सोंरई में अपर-प्राइमरी तक ही स्कूल था, अतः उसकी शिक्षा समाप्त कर मझले भैया वापिस घर चले आये। उनकी आगे पढ़ने की इच्छा बहुत अधिक प्रबल थी और वे महरौनी जाकर मिडिल स्कूल में भर्ती भी होना चाहते थे। मगर वहां रहने का साधन—बोर्डिंग हाऊस आदि न होने से वे वहाँ पढ़ने को नहीं जा सके। इस अवसर से लाभ उठाकर और गाँव में सबसे अधिक पढ़ा-लिखा देखकर बमराने वाले सेठों ने—जिनके कि अधिकार में हमारा गाँव उसी समय के लगभग ही आया था—अपने यहां बुला लिया, वे उनके यहाँ चले गये और उनकी जमींदारी और साहूकारी के काम की देख-भाल करने लगे।

बमराने वाले सेठों की धार्मिक प्रवृत्ति आदि का उल्लेख पूज्य क्षु० गणेशप्रसादजी वर्णी ने अपनी 'आत्मकथा' में किया है। उनके यहाँ रहते हुए वे उनके परिवार के अभिन्न अंग बनकर ही रहते थे। जिन धार्मिक संस्कारों का बीजारोपण सोंरई में नाना के यहाँ रहते हुए हुआ था, उनके फलने-फूलने का यहाँ खूब अवसर मिला। और वे सेठों के साथ प्रातः नियमित रूप से देव-पूजन शास्त्र-स्वाध्याय और सामायिक करते, दिन को उन्हीं के साथ उनकी कचहरी में बैठकर उनका कारोबार संभालते और सायंकाल उन्हीं के साथ देव-दर्शन वा सामायिक कर शास्त्र-वचनिका में भाग लेते। यहाँ यह बताने की आवश्यकता नहीं कि वे खान-पान आदि उन्हीं के साथ करते और बाहर धार्मिक मेलों आदि में उन्हीं के साथ जाते-आते थे।

यह क्रम निराबाधरूप से चल ही रहा था, कि हमारे घर पर विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ा—जिसका कि उल्लेख गतांक में किया गया है—फलस्वरूप मझले भैया अपनी विधवा बहिन को संभालने के लिए सेठों का कारोबार छोड़कर उनके यहाँ चले गये और जमींदारी व साहूकारी की जिस कला को उन्होंने बमराने वाले सेठों के यहाँ रहते समय सीखा था, उसके द्वारा बहिनोई साहब के अकस्मात् दिवंगत हो जाने के कारण अस्त-व्यस्त हुई उनकी जमींदारी और साहूकारी को संभालने लगे।

मझले भैया को आगे न पढ़ सकने का दुःख जीवन भर रहा और उसी के प्रतिकारार्थ उन्होंने अपने से छोटे तीनों भाइयों को पढ़ाने का दृढ़ संकल्प किया। फल-स्वरूप उन्हें गाँव की पढ़ाई समाप्त करने पर मड़ावरा

भेजा और वहाँ की पढ़ाई पूरी करने पर महरौनी मिडिल स्कूल में भेजा। इसी समय के आस-पास बमराने वाले सेठों के साथ मझले भैया दक्षिण के तीर्थों की वन्दनार्थ गये। मूडबिद्री के जिन मन्दिरों में विराजमान रत्न-बिम्बों को देखकर जहां सेठ लोग अत्यधिक प्रभावित हुए, वहां मझले भैया वहीं पर विद्यमान सिद्धान्त ग्रन्थ धवल-जयधवलादि की एकमात्र प्रतियों को देखकर अत्यधिक प्रभावित हुए। उस समय के उठे भावों की चर्चा वे समय-समय पर मेरे बचपन में उस समय किया करते थे—जबकि मैंने गांव के स्कूल में पढ़ना ही प्रारम्भ किया था। उनकी बातों से उस समय मैं केवल इतना ही समझ सका था कि जैनियों के सब से बड़े शास्त्र एक-मात्र मूडबिद्री में हैं, जो कि ताड़ के पत्तों पर उधर की किसी ऐसी भाषा में लिखे हुए हैं, जिन्हें आज का कोई बड़ा से बड़ा पंडित भी नहीं पढ़ सकता है।

दक्षिण की तीर्थ-यात्रा से लौटते हुए मझले भैया इन्दौर आये। उस समय सेठ हुकमचन्द्र जी ने अपनी नशियां में संस्कृत विद्यालय की स्थापना ही की थी। तब तक विद्यालय और छात्रालय के वर्तमान भवनों की नींव भी नहीं पड़ी थी। मझले भैया ने इस समय तक बनारस और मोरेना विद्यालयों की चर्चा तो सुनी थी, मगर उन्हें प्रत्यक्ष देखने का अवसर नहीं मिला था। इन्दौर की व्यवस्था देखकर वे बहुत प्रभावित हुए और घर आते ही उन्होंने उसकी चर्चा घरवालों से की। भाग्य से हमारे संझले भैया धर्मचन्द्र तभी हिन्दी मिडिल की परीक्षा दे कर घर आये थे, सो गर्मी की छुट्टी के बाद आगे पढ़ने के लिए मझले भैया ने उन्हें इन्दौर भेज दिया और उसके बाद उनसे छोटे भाई मनोहरलाल को भी। इस प्रकार हमारे परिवार में ही नहीं, अपितु गाँव में भी सर्वप्रथम संस्कृत विद्या के अध्ययन का आरम्भ हमारे ही घर से हुआ, तथा गाँव से बाहर पढ़ने के लिए भेजने का श्रीगणेश भी। आज हमारे छोटे से गांव के विद्वानों की संख्या एक दर्जन से ऊपर है, जिसमें आधे हमारे ही परिवार के हैं। 'कर्म धनी का, यश लाठी का' की उक्ति के अनुसार इसका निमित्त रूप से श्रेय हमारे मझले भैया को ही है। मुझे जो सिद्धान्त ग्रन्थों के अध्ययन का ही नहीं, अपितु अनुवाद आदि करने का अवसर मिला है, उसके बीज-वपन रूप संस्कार का श्रेय हमारे मझले भैया को ही है। उन्होंने ही सर्वप्रथम जैन-ग्रन्थों को हाथ से लिखकर घर पर रखा और शास्त्रों का छपना प्रारम्भ होने पर उनका अपनी आवश्यकता और गुंजायश के मुताबिक संग्रह प्रारम्भ किया। उसी के फलस्वरूप आज मेरे सरस्वती सदन में उच्चकोटि के ग्रन्थ एक अच्छी संख्या में विद्यमान हैं।

बहिन के यहाँ रहते हुए उन्हें जमींदारी और साहूकारी की अनेक उलझनों से भरे हुए कंटकाकीर्ण मार्ग से गुजरना पड़ा, पर वे सदा ही अपनी कुशलता और बोली की मिठास के द्वारा निडर, निरापद ही निकलते रहे। उनकी बोली में इतना अधिक मिठास था कि लोग अक्सर उन्हें मिट्ठनलाल कहकर ही पुकारते थे।

बहिन की जमींदारी के हिस्से का बँटवारा कराने के कारण अनेक जमींदार मझले भैया के प्राणों के प्यासे हो गये थे और वे सदा ही इसी फिराक में रहा करते थे कि अवसर पाकर इनका काम तमाम कर दिया जाय। मझले भैया भोजन करके प्रतिदिन अपनी साहूकारी के ग्राम जाया करते थे और शाम को भोजन करने के पूर्व ही लौट आया करते थे। उनकी इस दिनचर्या को ध्यान में रखकर उनके प्राणों के प्यासे कुछ जमींदारों ने एक दिन उनके प्राण लेने का निश्चय किया और वे लोग अपनी-अपनी कुल्हाड़ियों से लैस होकर एक नाले में छिप कर बैठ गये। ज्योंही मझले भैया उस नाले को पार करने लगे कि उन लोगों ने आवाज दी - ×लाला साहब खड़े रहो! उनकी बोली और भाव-भंगिमा को देखते ही वे सारी स्थिति को ताड़ गये और अपनी प्रकृति मधुर बोली में बोले —चलो, घर नहीं चलना है; तुम्हारे ढोरों के आने का और हमारे खाने का वक्त हो रहा है। सुनकर उनमें से एक बोला—ये तो रोजाना के काम लगे ही हुए हैं, आज एक जरूरी काम को सुलझाने आये हैं, सो जरा इधर आओ। भैया सारी परिस्थिति

× बहिन के यहाँ रहने के कारण गांव वाले साले-बहनोई के रिश्ते को ध्यान में रखकर उन्हें बुन्देलखंड की प्रथा के अनुसार 'लाला साहब' कहकर ही पुकारते थे। —लेखक

लोगों के पास जाकर बोले—जल्दी कहो, दिन थोड़ा रह गया है। यह सुनते ही एक बोला—दिन क्या थोड़ा रह गया है, उमर ही थोड़ी रह गई है? भैया बोले—संसार में अमर कौन है? चलो उठो, घर चलो और जो कुछ कहना हो, रास्ते में कहते-सुनते चलेंगे और तुम्हारी समस्या को भी सुलझा देंगे। उनमें से एक बोला—तुम क्या हमारी समस्या को सुलझाओगे—आज तो हम तुम्हारी समस्या को सुलझाने जुड़े हुए हैं। मझले भैया ने अत्यन्त शान्त स्वर में दृढ़ता के साथ कहा—तो लो, ये तुम्हारे बीच खड़े हैं, हमारे लिए इससे बड़ा क्या सौभाग्य होगा कि हमारी मौत हमारे बहनोइयों के हाथ से हो! इतना कहकर गोलाकार में बैठे हुए उन लोगों के बीच जा खड़े हुए। उनके इस व्यवहार को देखकर ही सबके जोश पर घड़ों पानी पड़ गया, वे एक दूसरे का मुख देखने लगे। तभी उनमेंसे एक बोला—लालासाहब! आज हम तुम्हारे मारने का पक्का निश्चय करके आये थे, पर तुम्हारी बोली ने हमें कायल कर दिया है। फिर भी हम १० बार कान पकड़कर उठने की सजा तो तुमको देते हैं। उनका यह आदेश सुनते ही भैया बोले—बस, इतनी सी ही सजा!!! लो, यह कह ज्योंही वे उसकी भरपाई को उद्यत हुए कि सब के सब एक साथ बोल उठे,—"लाला साहब,यह क्या करते हो? हम लोग तो मज़ाक कर रहे थे" और यह कहकर सबकें सब उनको गले लगाते हुए घर को चल पड़े।

———

मझले भैया

श्री पं० हीरालाल सिद्धान्तशास्त्री

(३)

(अंक ३ से आगे)

मझले भैया के जीवन का बहुभाग बहिन के ही गाँव में रहते हुए बीता। वे इतने अधिक लोक-व्यवहार-कुशल थे कि प्रायः स्थानीय पंचायतों में प्रमुख बना दिए जाते थे और लोग उनके द्वारा दिये गये निष्पक्ष फैसलों को सहर्ष माना करते थे।

पत्रों से भी वे हम लोगों को प्रायः नसीहत दिया करते थे। सन् १९२२ की जुलाई के प्रारम्भ में ही श्री मनोहरलाल शास्त्री-परीक्षा देकर सिवनी की जैन पाठ-शाला में अध्यापक होकर गये और जाते ही रोटी बनाने आदि की झंझटों से घबड़ाकर घर को पत्र लिखा कि मैं नौकरी छोड़कर घर वापिस आ रहा हूँ। उसके उत्तर में मझले भैया ने ता० १९-७-२२ को भा० मनोहरलाल के लिये जो पत्र लिखा था, उसकी अविकल नकल इस प्रकार है :—

'''अपरञ्च पत्री आपकी आयी, समाचार जाने, बाँच कर खुशी की बजाय कई गुना रंज हुआ। आपने लिखा कि हम आनेवाले हैं, यहाँ पर तकलीफ है; सो ठीक है। मगर जब आप यहाँ से गये, तब ये सब बात विचार कर चलना था। परदेश था ही, रोटी बनाने की, बरसात की, ये सब बातें जाहिरा थीं। फिर वहाँ जाने से कौन सी बड़ती बात हो गयी ? अगर आपके रहने से कुल तनख्वाह पूरी खर्च में हो जावे, तब तक नहीं आना, साल, दो साल तक तो आप रुपया का ख्याल नहीं करना, लोक-रीति, व्यवहार की सब बातें, सत्संगति, रुपया कमाना, विनय आदि गुण धारण करना ये बातें सीखो जरूर, इन बिना काम नहीं चलेगा। जैसी तरह आप आना चाहते हो, ऐसी तरह से लोक में हाँसी के सिवाय कुछ फायदा न होगा। क्या आपको तकलीफ जेल से ज्यादा होगी ! जेल में आदमी दो साल तक सजा पूरी कर लेता है, बस ज्यादा लिखने से क्या ? इसीमें समझ लेना। हमारी राय में आपको जाना उचित न था, जब चले गये, तब आना ठीक नहीं। काम सीखो। सेठ जी आदि से मेल से रहो। आपकी मनसा पूरी होगी।

घर का हाल, दुकान का हाल बिगड़ा हुआ है, तब आपको तकलीफ दी जाती है। तरक्की करना आपका काम है। खर्च का मौका आ रहा है'''।'

आजकल के पढ़नेवालों की फिजूल खर्ची और आरामतलबी को देखकर वे कभी-कभी बहुत दुखी होकर कहा करते थे, यदि हमें आजकल जैसी पढ़ाई के साधनों की सुलभता और छात्रावासों में निःशुल्क भोजनादि की सुविधा नसीब हुई होती तो हम बतलाते कि क्या कैसे पढ़ा जाता है ? (हम लोगों को लक्ष्य कर) कहा करते कि जहाँ तुम लोगों को विद्यालयों में पढ़ाई मुफ्त, भोजन मुफ्त और हाथ खर्च अलग मिलता है, तब भी तुम लोग सौ पचास रुपया सालाना घर से मँगाकर खर्च करते हो ! यदि हम तुम्हारी जगह आज पढ़ते होते तो सौ पचास रुपया सालाना उल्टे बचाकर लाते और इतना ही परीक्षा में अव्वल नम्बर प्राप्त कर प्रथम श्रेणी का पारि-तोषिक प्राप्त करते।

मझले भैया ने स्वावलम्बन का पाठ मानो जन्म से ही सीखा था और वे बिना किसी के सहारे ही आगे बढ़े थे, इसलिये जब कभी वे हम लोगों को दूसरे की ओर आशा भरी दृष्टि से देखते तो कहा करते कि 'आस पराई जे करें होत न ते मर जाहिं।' मैंने जिसदिन उनके मुख से यह वाक्य सुना, उसीदिन प्रतिज्ञा की कि आज से एक पाई भी अपनी पढ़ाई या दीगर खर्चे आदि के वास्ते घर वालों से नहीं माँगूँगा और केवल टिकिट के रुपये लेकर इन्दौर चला गया। मेरी पढ़ाई का वह अंतिम वर्ष था, मैं इन्दौर जैसे शहर में पहली बार ही गया था। अतः जहाँ पहली वर्ष नाटक देखने और सैर-सपाटे करने और गपशप में अधिक समय बिताया था, वहाँ अब की बार मैं सब भूल गया और रह-रह कर मँझले भैया की उक्त बातें याद आतीं'''मुझे ये सुविधाएँ मिली होतीं तो उल्टे सौ पचास कमाकर लाता 'आस पराई जो करें होत न ते मर जाहिं'''' फल स्वरूप मैंने प्रतिज्ञा की कि विद्यालय से जो भी हाथखर्च मिलता है, उसीमें मैं अपना मासिक खर्च चलाऊँगा। जो कपड़े हैं उन्हीं से गुजर करूँगा और

सारा समय अपनी पढ़ाई में लगाऊँगा। मँझले भैया की उक्त सीखों के फलस्वरूप मैं न्यायतीर्थ और शास्त्री की परीक्षा में अच्छी श्रेणी से उत्तीर्ण हुआ और ५२) रु० पारितोषिक भी प्राप्त किये। जिस दिन मँझले भैया ने मेरे परीक्षाफल एवं पारितोषिक की बात सुनी, वे आनन्द-विभोर होकर बोले 'बस इसी तरह आगे भी पढ़ाई जारी रक्खो, मेरी हार्दिक अभिलाषा है कि तुम एम० ए० और आचार्य परीक्षाएँ उत्तीर्ण होने पर ही अपनी पढ़ाई पूरी करो।

पर मेरे भाग्य में ये दोनों ही बातें नहीं लिखी थीं, हालांकि मैं मझले भैया की मनसा के माफिक ही उक्त पढ़ाई पूरी करने के लिये बनारस गया था, पर दुर्भाग्य की बात कि ता० १९-१०-२४ की रात्रि को मझले भैया की सख्त बीमारी का तार मिला। मैं तुरन्त वहाँ से रवाना हुआ, किन्तु मेरा दुर्भाग्य कि मैं उन्हें जीवित नहीं पा सका, वे मेरे पहुँचने के एक घंटे पूर्व ही महाप्रयाण कर चुके थे। और मैं इसके बाद बनारस वापस नहीं जा सका।

Part 4 missing

संस्मरण—(५)

मझले भैया

श्री पं० हीरालाल सिद्धान्तशास्त्री

(गतांक से आगे)

मझले भैया की इच्छा अपने से छोटे तीनों भाइयों को अधिक से अधिक पढ़ाने की थी। मगर परिस्थितिवश उनसे छोटे भाई की पढ़ाई विशारद से आगे जारी न रह सकी और वे पढ़ना छोड़कर ललितपुर में दुकान करने लगे। उनसे छोटे भाई शास्त्री पास करके सिवनी की पाठशाला में पढ़ाने लगे। मैं सबसे छोटा था अतः मझले भैया की हार्दिक इच्छा थी कि यह धर्म में सिद्धान्त शास्त्री, संस्कृत में आचार्य और अंग्रेजी में एम० ए० हो। उनकी इसी भावना से प्रेरित होकर मैं सन १९२३ में इन्दौर-महाविद्यालय से न्यायतीर्थ परीक्षा उत्तीर्ण कर शास्त्रीय परीक्षा के अवशिष्ट धर्मशास्त्र के उच्च ग्रन्थों के अध्ययनार्थ श्रीमान् सिद्धान्त महोदधि पं० वंशीधर जी सा० के पास जबलपुर-शिक्षा मन्दिर में पहुंचा और सिद्धान्त ग्रन्थों के अध्ययन के साथ-साथ अंग्रेजी विभाग के छात्रों को धर्मशास्त्र का अध्ययन भी कराने लगा। वहाँ का धार्मिक कोर्स समाप्त कर आगे आचार्य और एम. ए. करने की इच्छा से सन् १९२४ की जुलाई के प्रारम्भ में बनारस पहुँचा। भाग्यवश स्याद्वाद महाविद्यालय में धर्माध्यापक का स्थान रिक्त था। अतः मन्त्री और अधिष्ठाता जी की प्रेरणा से मैंने उस स्थान पर कार्य करना प्रारम्भ कर दिया—यह सोचकर कि यहाँ अध्यापन करते हुए भी आगे की पढ़ाई जारी रख सकूंगा। मगर जब मझले भैया को यह ज्ञात हुआ तो उन्हें मेरी नौकरी स्वीकार करना अच्छा नहीं लगा और उन्होंने मुझे पत्र भी लिखा। परन्तु मैं बनारस-विद्यालय के धर्माध्यापकी का प्रलोभन नहीं छोड़ सका।

इसी वर्ष दशलक्षण पर्व में खुरई (सागर) के श्रीमंत सेठ मोहनलाल जी का आमंत्रण पाकर मैं वहाँ गया। हमारे प्रान्त में श्रीमन्त साहब की जैसी प्रभुता की धाक थी, वैसी ही उनकी विद्वत्ता की भी। दूसरे वहाँ की शास्त्र-गादी पर हस्तलिखित शास्त्र ही पढ़े जाते थे, अतः मझले भैया बड़े चिन्तित हुए कि वहाँ की शास्त्र-सभा को संभालना इसके (मेरे) वश का नहीं है और उन्होंने मुझे तुरन्त एक बन्द पत्र भी लिखा कि पूरी होशियारी से शास्त्र सभा को संभालना, कहीं ऐसा न हो कि अपनी फजीहत करा के आओ, आदि। जब मैं वहां से ससम्मान विदा होकर ललितपुर पहुंचा तो सब समाचार सुनकर मझले भैया के हर्ष का पारावार न रहा!

यहाँ एक ऐसी घटना घटी कि जिसका दुःख मुझे अभी तक है और जीवन-भर बना रहेगा। बात यह हुई कि इन दिनों मझले भैया बीमार थे और वे इलाज के लिए ही बहिन के यहाँ से ललितपुर आये हुए थे। उन्हें इलाज के लिए रुपयों की जरूरत थी। मैं यह जान नहीं सका और न जान सकने का कारण यह था कि एक तो बहिन की सम्पन्नता और दूसरे वहाँ घर की दुकान। मेरे पास मुझे दी गई भेंट के अतिरिक्त विद्यालय को दी गई सहायता के भी रुपये थे। मुझे ही चाहिए था कि मैं स्वयं ही भेंट के रुपये उन्हें दे देता और पूछता कि भैया, और रुपयों की तो इलाज के लिए जरूरत नहीं है। मगर उस समय मुझमें इतना विवेक कहाँ था, अतः बाल-बुद्धिवश मैं वैसा न कर सका और न वे स्वाभिमान वश मुझसे ही रुपया माँग सके। क्योंकि मझले भैया प्रायः कहा करते थे कि 'मर जाऊँ, माँगूं नहीं अपने तन के काज।' यह बात दो मास के बाद उनके स्वर्गवास हो जाने और मेरे घर आने पर बहिन से मुझे मालूम हुई, जिसकी याद सदा ही शूल के समान हृदय में चुभा करती है।

इधर मैं ललितपुर से बनारस चला गया और उधर मझले भैया की बीमारी दिन पर दिन बढ़ती गई। जो भैया दुकान करते थे, उनके द्वारा उनकी बिगड़ती हुई हालत के समाचार मिलने लगे और मैं पत्र लिख-लिख कर प्रेरणा करने लगा कि मझले भैया के इलाज में किसी प्रकार की कोई कमी न रखी जावे, आदि। इसी समय बनारस में रहते हुए

हुए ही मुझे स्वप्न आया कि घर से तार आया है कि "मझले भैया सख्त बीमार हैं, तुरन्त आओ।" और मैं तार पाकर घर पहुंचा। मझले भैया को मृत्यु-शैय्या पर पड़ा पाया, तब मैं उन्हें समाधिमरण-पाठ सुनाने लगा। इतने में ही विद्यालय की सबेरे छात्रों को जगाने की घंटी बजी (मैं विद्यालय के हाल में ही सोता था) मैं घण्टी सुनकर जाग उठा। तुरन्त आये हुए स्वप्न का प्रभाव दिमाग पर था, अतः किंकर्त्तव्य-विमूढ़ सा हो गया और दिन को डाक की आने की राह देखने लगा। डाक आई सझले भाई का पत्र मिला लिखा था कि "पिछले दिनों मझले भैया की तबियत बहुत खराब रही। गुढ़ा (भदौरा) के वैद्य अड़ाकूलाल जी के इलाज से आराम है, मझले भैया वैद्य जी के साथ बहिन के यहाँ चले गये हैं और इलाज करा रहे हैं, चिन्ता न करना, आदि।"

पत्र पढ़कर यद्यपि चित्त को कुछ सान्त्वना अवश्य मिली, पर मन में रह-रहकर किसी भावी अनिष्ट की आशंका उठ रही थी, अतः एक विस्तृत पत्र (पूरे १२ पेज का, जो आज भी सुरक्षित है×) मझले भैया के नाम से लिखा—जिसका सारांश यह था कि भैया, तुमने स्वयं अविवाहित रहकर और अनेकों कष्ट सहन कर घर को समृद्ध किया और हम लोगों को योग्य बनाया। अब आपके आराम और धर्मसाधन के दिन हैं सो घर की सब चन्ता छोड़ कर और किसी आश्रम तीर्थस्थान या जहाँ चाहें, वहाँ रहकर आत्म-कल्याण के मार्ग में लगें आदि। पत्र लिखकर दुकान के पते पर भेज दिया और सझले भैया को पृथक् पत्र लिख कर प्रेरणा की कि वे बहिन के यहाँ जाकर मझले भैया को साथका पत्र दे दें और यदि उनके स्वयं न पढ़ सकने की स्थिति हो, तो सुना देवें

मैं पत्र डाक में डालकर निश्चिन्त हो गया और सदा की भांति रात्रि को साढ़े नौ बजे सो गया। अभी नींद लगी ही थी, कि विद्यालय के तात्कालिक सुपरिंटेण्डेण्ट श्री० बा० पन्नालाल जी चौधरी ने आकर जगाया और एक तार हाथ में थमा दिया। तार में वही लिखा था जो आज ही सबेरे स्वप्न में देखा था, अर्थात् मझले भैया सख्त बीमार हैं, तुरन्त आओ।' घड़ी देखी, तो ११॥ बजे थे। सुपरि० सा० से ज्ञात हुआ कि १२॥ बजे मुगलसराय को गाड़ी जाती है, वहाँ से कानपुर के लिए लगी गाड़ी मिलेगी। मैं जरूरी सामान और रुपये लेकर तुरन्त स्टेशन को रवाना हो गया। बड़ी कठिनाई से राज घाट पर गाड़ी पकड़ सका। और मुगलसराय आकर कानपुर वाली में सवार हो गया। गाड़ी में सोने के योग्य स्थान मिल जाने से मैं लेट गया और दौड़ धूप के कारण थका होने से नींद लग गई। जब इलाहाबाद स्टेशन पर नींद खुली तो सिरहाने रखा सामान गायब पाया। उठकर डिब्बे भर की छान बीन की। मगर उड़ानेवाला तो सामान लेकर कभी का चम्पत हो चुका था। गनीमत यही रही कि नोट अंटी में लगे थे। दिल को बड़ा धक्का लगा और भावी अनिष्ट की आशंका रह-रहकर उठने लगी किसी प्रकार कानपुर स्टेशन आया। शहर में जाकर श्रीमान् कन्हैयालाल जी वैद्यराज से मिला। मझले भैया की शारीरिक स्थिति से वे परिचित थे, वर्तमान की सारी हालत उन्हें बताई और आवश्यक रस-मात्रा दवा और फल आदि लेकर ललितपुर को रवाना हो गया। स्टेशन पर पहुंचा तो ज्ञात हुआ कि भाई-भावी वगैरह २ दिन पूर्व ही बहिन के यहां चले गये हैं। मैं उसी तांगे को लेकर आगे बढ़ा और जहाँ तक पक्की सड़क थी, उसे ले गया। आगे दो मील कच्चा रास्ता था और खेतों में से तांगा जाने का कोई उपाय नहीं था। अतः उसे वहीं छोड़कर पैदल ही बहिन के घर को रवाना हुआ। ज्यों-ज्यों गांव समीप आने लगा—त्यों-त्यों लोगों के रोने की आवाज साफ-साफ सुनाई देने लगी। भारी अनिष्ट की कल्पना से हृदय बैठने लगा, पैर उठाये नहीं उठते थे, जिस किसी प्रकार घर पहुँचा तो देखा कि सारे घर में कुहराम मचा हुआ है। लोग मझले भैया के पार्थिव शरीर को जलाने के लिए श्मशान ले गये हैं—मैं बेहोश होकर गिर पड़ा।

—क्रमशः

× यदि पाठकों की इच्छा होगी तो आगामी किसी अंक में उसे प्रकाशित किया जायगा।

मझले भैया

श्री पं० हीरालाल सिद्धान्तशास्त्री

(गतांक से आगे)

जब होश में आया, तो उठकर सीधा स्मशान पहुँचा, मझले भैया के चिता में धधकते हुए पार्थिव शरीर को अपनी श्रद्धाञ्जलि समर्पित की और पता नहीं, कितनी देर तक वहाँ बैठा रोता रहा।

किसी प्रकार दिन बीता। शाम को ग्राम वाले एकत्रित हुए और मझले भैया के सम्बन्ध में नाना प्रकार की चर्चा करते रहे। कोई उनके लोक चातुर्य की प्रशंसा करता, तो कोई उनकी धार्मिक वृत्ति की। कोई साहस की, तो कोई उनके अपार धैर्य की। गरज यह कि सभी लोग उनके विभिन्न गुणों को याद करके उनकी प्रशंसा कर उनके वियोग से संतप्त हम सबको धैर्य बंधाने का प्रयत्न करते रहे और इस प्रकार आधी रात बीत गई।

गाँव वालों के चले जाने पर मैंने बहिन से पूछा—बीमारी ने उग्र रूप कब धारण किया, मझले भैया कब तक होश में रहे और बेहोश होने के पूर्व में उन्होंने क्या क्या बातें कहीं? बहिन ने बतलाया कि आज से तीन दिन पूर्व जब वे बैठ-उठ सकते थे, तब उन्होंने कागजों का बस्ता मांगा और दवात-कलम भी मांगी। बहियों को उलट-पुलट कर एक कागज पर कुछ लिखा और बस्ता बांध कर वापिस रखने के लिए दे दिया। उसी दिन दोपहर को वैद्य जी ने हमें इशारा किया कि मझले भैया की नाड़ी की गति धीमी पड़ रही है, तो तुम छोटे भाइयों को तार वगैरह देकर बुलवालो। वैद्य जी ने उक्त बात बिलकुल एकान्त में कही थी और मैंने (बहिन ने) भी बिलकुल गुप्तरूप से आदमी को ललितपुर भेजकर के संझले भैया को कहलवाया कि वे सिवनी और काशी तार देकर दोनों छोटे भाइयों को बुलवा लेवें और स्वयं जल्दी यहाँ आवें, मझले भैया की तबियत गिर रही है। मझले भैया ने स्थिति को भांप लिया और मुझे बुलाकर बोले—किसी को तार वगैरह देने की जरूरत नहीं है, मेरी तबियत ठीक है। बेकार में वे लोग घबड़ा कर भागे हुए आवेंगे आदि। उसी दिन शाम को तार वगैरह देकर मझले भैया ने मुझे अपने पास बुलाकर कहा, 'बहिन, जिसका हम कर्ज लाये, अपने हाथ चुका नहीं पाये। लोग क्या कहेंगे कि खाकर मर गया।' बहिन ने बताया कि मैं तो इतना सुनते ही घबड़ा गई, मुख से सान्त्वना के बजाय एक चीख निकल पड़ी और आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगी। उधर मझले भैया का बोल बन्द हो गया। यद्यपि वे होश में कल शाम तक रहे, पर बोल न सके और अपनी बात स्लेट पर लिखकर बताते रहे। बेहोशी के समय में भी ऐसा लगता था, मानों उनके मुख से सिद्ध सिद्ध शब्द निकल रहा हो। जब तक होश में रहे, भक्तामर, एकीभाव और संकट हरण स्तोत्र का पाठ करते रहे। इस तरह बहिन की बातें सुनते हुए मुझे भी नींद आ गई। बड़े भैया, सझले भैया की नींद पहले ही लग गई थी।

नींद आते ही मैं स्वप्न में क्या देखता हूँ कि मझले भैया सामने खड़े हैं। नींद में ही मैंने कहा—भैया, तुम तो दिवंगत हो चुके हो, आज दिन को सब लोग तुम्हारे पार्थिव शरीर को चिता में भस्म भी कर आये हैं, फिर तुम यहाँ कैसे? उन्होंने दाहिने हाथ को उठाकर चुप रहने का इशारा किया और स्वयं चित्रान-लिखित से रह गये। तब मैंने पुनः उनसे कहा—भैया, इतने उदास से चिन्तित क्यों दिख रहे हो? वे बोले—उदास और चिन्तित होने की तो बात ही है। लोग क्या कहेंगे—कि मैं लोगों का रुपया (कर्ज) खाकर मर गया! मैंने कहा पहले तो तुमने जो कर्ज लिया है, वह अपने लिए नहीं लिया, हम लोगों की शादी आदि के लिया है। दूसरे आपने इतनी जायदाद अपने पीछे छोड़ी है कि वह कर्ज सहज में ही चुक सकता है, फिर चिंता

की क्या बात है ?

यहाँ प्रकरण-वश मैं इतना बतला देना चाहता हूँ कि ललितपुर की दुकान घाटे से चल रही थी पिछले एक ही वर्ष के भीतर हमारे दो भाइयों की तथा एक भतीजी की इस प्रकार तीन शादियाँ हुई थीं, और इसी कारण लोगों से पर्याप्त रुपया कर्ज लिया गया था।

जब मैंने स्वप्न में ही कर्ज चुक सकने की बात कही तो उनका मुख और भी गम्भीर हो गया और बोले—कोई चुकाने वाला नहीं दिखता। मैंने कहा, कोई और भाई कर्ज चुकाये, या न चुकाये, मैं चुका-ऊँगा—तो मेरी ओर गहरी नजर से देखकर बोले—तुम चुकाओगे ? मैंने कहा—हाँ, मैं चुकाऊँगा और प्रतिज्ञा करता हूँ—कि जब तक तुम्हारा लिया हुआ कर्ज चुका नहीं दूँगा, तब तक न सोना-चांदी खरी-दूँगा और न ऊनी, रेशमी वस्त्र पहनूँगा। आप बतलाइये—किसका कितना रुपया देना है। मेरी प्रतिज्ञा सुनकर बोले तो सुनो, अमुक व्यक्ति का... इतना देना है। मैंने स्वप्न में ही जमीन पर अँगुली से उसे लिखकर पूछा—और ? उन्होंने दूसरे व्यक्ति का नाम बोलकर रकम बतलाई। मैंने उसे भी जमीन पर लिख कर पूछा—और ? उन्होंने तीसरे व्यक्ति का नाम बताकर रकम बतलाई। मैंने उसे लिख कर पूछा—और ? इस प्रकार ७-८ कलमें लगभग ३५००) की उन्होंने लिखा पाई थी—कि बगल में पड़े हुए बड़े भैया ने मुझे हाथ से हिलाते हुए कहा—हीरा, और-और क्या कह रहा है ? उनके हिलाने से मेरी नींद खुल गई और मैंने अत्यन्त विषण्ण होकर कहा—मैं तो मझले भैया से बातें कर रहा था—और वे यहाँ खड़े होकर अपना लिया हुआ कर्ज बतला रहे थे, तुमने व्यर्थ में ही मुझे जगा दिया। और जो कुछ स्वप्न में देखा था वह सब उन्हें सुना दिया। पास पड़े हुए सझले भैया भी जग उठे, बहिन भी हम लोगों की बातें सुनकर जाग उठी और मझले भैया की ही चर्चा चलने लगी।

तीसरे दिन शुद्धता के होने के पश्चात् जो कागजों का बस्ता खोलकर देखा—तो सब के आश्चर्य का पारावार नहीं रहा—कि सबसे ऊपर एक पीला कागज मझले भैया के हाथ का लिखा रखा था, जिसमें वह कर्ज ठीक उसी प्रकार से लिखा हुआ था, जिस प्रकार से मुझे स्वप्न में मझले भैया ने बतालाया था।—

(क्रमशः)

Does it continue?